असर 2008 राष्ट्रीय झलकियाँ

2008 में किया गया असर (एन्यूअल स्टेटएस ऑफ एज्यूकेश्न रिपोर्ट) जो भारत के ग्रामीण जिलों के घरों में किया जाता है अब सम्पन्न हो चुका है। इस सर्वे में निम्नलिखित जानकारियां उभर कर सामने आई हैं :

स्कूल से बाहर बच्चों का प्रतिशत गिरा। बिहार का प्रदर्शन अच्छा।

1: राष्ट्रीय स्तर पर, 7–10 साल के आयुवर्ग के स्कूल से बाहर बच्चों का अनुपात 2.7% है। 11–14 आयु वर्ग के स्कूल से बाहर बच्चों का अनुपात 6.3% है।

2: 2007 से 2008 के बीच 11–14 आयुवर्ग की स्कूल से बाहर लड़कियों का अनुपात 7.3% पर स्थिर रहा है।

3: उत्तर प्रदेश व राजस्थान के अलावा, ज़्यादातर राज्यों में स्कूल के बाहर बच्चों का प्रतिशत 2007 से अब तक घटा है।

4: बिहार में 2005 में 13.1% बच्चे स्कूल में नामांकित नहीं थे और 2008 में यह घटकर 5.7% पर आ गया है। इसी समय में 11–14 आयुवर्ग की स्कूल न जाने वाली लड़कियों का अनुपात 20.1% से घट कर 8.8% पर आ गया है।

निजी स्कूलों में दाखिले बढ़ रहे हैं।

1: निजी स्कूलों में, 2005 से 2008 तक 6–14 साल के बच्चों का अनुपात 16.4% से 22.5% तक बढ़ा है। निजी स्कूलों में दाखिलों की बढ़त 2005 से 37.2 प्रतिशत की रही है। यह बढ़त कर्नाटक, उत्तर प्रदेश व राजस्थान में महत्वपूर्ण रही है।

2: 2008 में 7–10 व 11–14 आयुवर्गों में लड़कियों के मुकाबले 20% ज़्यादा लड़के निजी स्कूलों में दाखिल हुए हैं।

3: केरल व गोआ में स्कूल जाने वाले आधे बच्चे निजी स्कूलों में जाते हैं। (DISE के अनुसार केरल में 95% निजी स्कूल व गोआ में 70% निजी स्कूलों को सरकारी अनुदान प्राप्त है)।

4: नागालैण्ड, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व राजस्थान में 32% से 42% बच्चे निजी स्कूलों में जाते हैं (DISE के आंकड़े दिखाते है कि इन राज्यों में निजी स्कूल ज़्यादातर सरकारी अनुदान प्राप्त नहीं है)।

स्कूल में आने वाले 5 साल के बच्चों की संख्या बढ़ रही है।

1: औसतन, भारत में पहली कक्षाओं में 24.75% बच्चों की उम्र 6 साल से कम है।

2: 5 साल के 56.6% बच्चे स्कूलों में दाखिल हैं न कि आंगनवाड़ी /बालवाड़ियों में।

3: राजस्थान, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, हिमाचल व हरियाणा में 70% 5 साल के बच्चे स्कलों में हैं। यहां कक्षा 1 में 25–40% बच्चे 5 साल की उम्र के हैं।

4: पिछले 3 सालों में हिमाचल, हरियाणा व तमिलनाडु में पाँच साल की उम्र के स्कूल जाने वाले बच्चों का अनूपात 16 से 20 प्रतिशत प्वाइंट बढ़ गया है।

छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में पठन क्षमता में तीव्र वृद्धि।

1: 2008 में छत्तीसगढ़ में बच्चों की पठन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कक्षा 3 में ऐसे बच्चे जो कक्षा 1 के स्तर का पाठ पढ़ पाये– उनका अनुपात 2007 में 31% से बढ़ कर 2008 में 70% हो गया है। 2007 में कक्षा 5 में 58% ऐसे बच्चे जो कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ पाये। 2008 मे यह आँकड़ा 75% हो गया। छत्तीसगढ़ के हर कक्षा में पठन स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि नज़र आ रही है।

2: असर 2008 ने यह दिखाया की 2006 और 2007 कि तरह मध्य प्रदेश की पठन क्षमता में हर स्तर पर वृद्धि हुई। सरकारी स्कूलों के कक्षा 5 में 86.8% ऐसे बच्चे थे जो कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ सके।

3: मध्य प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ व हिमाचल प्रदेश ऐसे राज्य हैं जो बच्चों में बुनियादी पठन प्रवाह में अग्रणी हैं। इन राज्यों में कक्षा 1 के अक्षर (या उससे ज़्यादा) पढ़ने वाले बच्चे 85% हैं और जो कक्षा 5 में कक्षा 2 का पाठ (या उससे ज़्यादा) पढ़ सकते थे वे 75% से अधिक हैं।

4: मध्य प्रदेश में प्रगति दो चरणों में हुई जिससे 2006 में पहली बढ़त दिखी और अगली 2008 में।

5: कर्नाटक व उड़ीसा में कक्षा 2 से कक्षा 4 तक पढ़ने में सक्षम बच्चों के अनुपात में नियमित वृद्धि नज़र आई। 2006 से 2008 तक पठन स्तर में 5 से 6 प्रतिशत प्वाइंट की वृद्धि नज़र आई।

6: असर ने चार साल तक वही पठन सामग्री व तरीका इस्तेमाल किया है। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, हिमाचल, आँध्र व छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों को छोड़ कर अन्य राज्यों में बुनियादी पठन स्तर में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नज़र नहीं आया है।

छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश में गणित में वृद्धि।

1: असर की जाँच से दिखता है कि पिछले साल से मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में बुनियादी गणित क्षमता बढ़ाने मे बहुत महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। दोनों राज्यों में पहली कक्षा के 91% से अधिक बच्चे 1–9 (या ज्यादा) के अंक पहचानते हैं।

2: कक्षा 3 में मध्य प्रदेश में घटाने का सवाल (या इससे ज्यादा) हल करने वाले बच्चों का अनुपात 2007 में 61.3% से बढ़ कर 2008 में 72.2% तक आ गया है जबकि केरल में यह 61.4% है।

3: 2008 में मध्य प्रदेश में कक्षा 5 के 78.2% बच्चे भाग के सवाल का सही हल निकाल सकते थे। यह देश में सबसे ऊँचा है। कई राज्यों में यह आँकड़ा 60% है। उदाहरण– हिमाचल, छत्तीसगढ़, मणिपुर व गोआ।

4: छत्तीसगढ़ में गणित में प्रगति महत्वपूर्ण रही है जिससे केन्द्रित प्रयास का संकेत मिलता है। 2008 में कक्षा 2 के बच्चे जो 100 तक के अंक पहचान पाते थे या ऊँचे स्तर के सवाल कर पाते थे वे 77.8% हैं यह आंकड़ा 2007 में कुल 37.2% था। 2007 में 21.8% बच्चे कक्षा 3 में घटा का सवाल (या इससे ज्यादा) कर पाते थे; 2008 में इनका अनुपात 63.5% हो गया।

समय बताना।

1: भारत में कक्षा 5 के 61% बच्चे घड़ी में सही समय बता पाते हैं।

2: उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, आँन्ध्र प्रदेश, गुजरात जैसे राज्यों में कक्षा 5 के 50% बच्चे समय बता पाते हैं। बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, पंजाब, उत्तराखण्ड राष्ट्रीय औसत से ऊपर हैं।

3: मध्य प्रदेश, केरल, छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र में जहाँ गणित व पठन क्षमता राष्ट्रीय औसत के कहीं बेहतर है वहाँ कक्षा 5 के 75% बच्चे समय बता पाते हैं।

सर्वे के अन्य रोचक तथ्य।

1: असर 2008 में गाँव मे सहूलियतें व घरों की विशिष्टताओं का भी पता लगाया गया जिससे कि इनका शिक्षा से सम्बन्ध को समझा जा सके। इस विषय पर विशलेषण चल रहा है।

2: 92.5% ग्रामीण बसापतों में 1 किलोमीटर की दूरी पर प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध हैं। 67% गाँवों में सरकारी माध्यमिक विद्यालय हैं और 33.8% में सरकारी उच्च–माध्यमिक विद्यालय हैं। 45.6% भारतीय गाँवों मे निजी स्कूल उपलब्ध हैं।

3: 58.5% गाँवों में एसटीडी बूथ हैं जबकि 48.3% ग्रामीण घरों में फोन (सेल फ़ोन या लैन्ड लाइन) मौजूद हैं।

4: सर्वे किए गए 65.9% घरों में बिजली की आपूर्ति उपलब्ध थी।

5: 71.9% गाँवों तक पक्की सड़क है। आसाम (32.7%), पश्चिम बंगाल (44.2%), बिहार (53.2%) व मध्य प्रदेश (58.9%) में सबसे निचले आँकड़े है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें, गुंजन गोस्वामी,
फोनः 9717329222, ईमेलः gunjangoswami@gmail.com
ईमेलः aser.contact@gmail.com
असर रिपोर्ट asercentre.org पर उपलब्ध है।